सरसों की वैज्ञानिक खेती

सरसों की वैज्ञानिक खेती

सरसों का रबी मौसम की तिलहनी फसलो में प्रमुख स्थान है। सरसों की खेती विभिन्न फसल चक्र जैसे धान–सरसों व बाजरा–सरसों आदि में की जाती है। सरसों की उत्पादकता को प्रभावित करने वाले अनेक मुख्य कारक हैं जैसे – उन्नत किस्म का चयन नही करना, असंतुलित ऊर्वरको का प्रयोग, पादप रोगो, कीटो एवं खरपतवारो का प्रबंधन ठीक से न करना आदि अगर निम्नलिखित उन्नत तकनिकीयो को अपनाया जाये तो निश्चित रूप से सरसों की उत्पादकता को बढ़ाया जा सकता है :–

उन्नत किस्में :-

किस्में	फसल अवधि (दिन)	उपज कु0/है0	तेल प्रतिशत	विशेषताएं
आर.एच. 749	139–150	24–28	40	सिंचित क्षेत्र मे समय से बुवाई के लिए उपयुक्त
गिरिराज	137–153	22–27	39–42.6	सिंचित क्षेत्र मे समय से बुवाई के लिए उपयुक्त
एन.आर.सी. डी.आर–2	131–156	19–29	40	सिंचित क्षेत्र मे समय से बुवाई के लिए उपयुक्त
पूसा विजय	135–154	21–25	38.5	लवणीय प्रभावी क्षेत्रो के लिए उपयुक्त
डी.आर.एम. आर. 1165–40	133–151	22–26	40–42.5	असिंचित क्षेत्र में समय से बुवाई के लिए उपयुक्त
एन.आर.सी. डी.आर. 601	137–151	19–26	39–41.6	संचित क्षेत्र के समय बुवाई के लिए उपयुक्त
आर.एच. 725	137–148	23–25	40	समय से बुवाई के लिए उपयुक्त

देर से बोई जाने वाली उन्नत किस्में

किस्मे	फसल अवधि (दिन)	उपज कु0 / है0	तेल प्रतिशत
आर.जी.एन. 145	121–141	14–16	39
एन.आर.सी. एच.वी. 101	120–125	12–14	40
आशीर्वाद	125–130	14–16	40

खारे पानी में पाये जाने वाली उन्नत किस्में (पीली सरसों की उन्नत किस्में)

पन्त पीली सरसो–1	99–125	10.5–11.6	42–44
एन.आर.सी.वाई.एस.–05–02	94–120	12–17	38–45
वाई.एस.एच.–401	110–115	12.7–16.5	43–45

सस्य क्रियाएँ :-

खेत का चुनाव एवं खेत की तैयारी - सरसों की फसल के लिए बलुई दोमट से दोमट मिट्टी वाली भूमि उपयुक्त रहती है। वर्षा ऋतु समाप्त होने के बाद खेत की एक–दो जुताई इस तरह से करें कि भूमि में नमी संरक्षण के साथ–साथ खरपतवार न जमने पायें एवं बुवाई से पहले खेत को दो बार जुताई करके तैयार करें।

बुवाई का समय एवं विधि :- सिंचित क्षेत्रो में सरसों की बुवाई का उपयुक्त समय अक्टूबर का प्रथम पखवाड़ा होता है। असिंचित क्षेत्रो में सरसों की बुवाई का उपयुक्त समय सितम्बर का द्वितीय पखवाडा होता है। (विलम्ब से बुवाई करने पर माहू एवं अन्य कीटो एवं बीमारियों की प्रकोप के संभावना रहती है।)

पोषक तत्व प्रबंधनः - उर्वरकों का प्रयोग मिट्टी परीक्षण की संस्तुतियों के आधार पर किया जाना चाहिए। सिंचित क्षेत्रो मे नत्रजन 80 किग्रा0, फास्फोरस 50–60 किग्रा0 एवं पोटाश 30–40 किग्रा0 प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करने से अच्छी उपज प्राप्त होती है। फास्फोरस का प्रयोग सिंगल सुपर फास्फेट के रूप में अधिक लाभदायक होता है। क्योंकि इससे सल्फर की उपलब्धता भी हो जाती है। यदि सिंगल सुपर फास्फेट का प्रयोग न किया जाये तो सल्फर की उपलब्धता को सुनिश्चित करने के लिए 25–30 किग्रा / हे0 की दर से सल्फर का प्रयोग बुवाई के समय करना चाहिए। यदि

डी.ए.पी. का प्रयोग किया जाता है तो इसके साथ बुवाई से पूर्व 300 किग्रा0 जिप्सम प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करना फसल के लिए लाभदायक होता है तथा अच्छी उपज प्राप्त करने के लिए 60 कुन्तल प्रति हे0 की दर से सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करना चाहिए। सिंचिंत क्षेत्रों में नत्रजन की आधी मात्रा व फास्फोरस एवं पोटाश की पूरी मात्रा बुवाई के समय प्रयोग करना चाहिए। नत्रजन की शेष मात्रा पहली सिंचाई के बाद टापड्रेसिंग से रूप में डाली जानी चाहिए।

सिंचाई प्रबंधन :- सरसों की फसल नमी की कमी के प्रति, फूल आने के समय तथा फलीयाँ बनने की अवस्थाओं में विशेष संवेदनशील होती है। अतः अच्छी उपज प्राप्त करने के लिए (35–40 दिनों के बीच) फूल बनने की अवस्था पर ही प्रथम सिंचाई करें। एवं दूसरी सिंचाई फली बनने की अवस्था पर करनी चाहिए।

खरपतवार नियंत्रण :- खरपतवारों के नियंत्रण के लिए बुवाई के 25–30 दिन बाद निराई–गुड़ाई करनी चाहिए तथा रासायनिक विधि से खरपतवार नियंत्रण के लिए फलूक्लोरालिन 2.2 लीटर मात्रा 700–800 लीटर पानी मे घोलकर प्रति हैक्टर की दर से बुवाई से पूर्व छिड़काव कर भूमि में मिलाना चाहिए।

समेकित नाशीजीव प्रबन्धन :-

1. ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई करने से पौधों के अवशेषों पर पड़े रोगजनक जमीन में गहराई में दब जाते हैं तथा कुछ रोग जनक अधिक तापमान के कारण नष्ट हो जाते है ऐसा करने से रोगों की उग्रता में कमी आती है।
2. बीज को फफूंदीनाशी ट्राईकोडर्मा विरिडी (4 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज) अथवा कार्बनडजिम (2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज) से उपचारित करके बुवाई करें।
3. पोषक तत्वों का संतुलित मात्रा में प्रयोग करें।
4. सरसो की बुआई 10–25 अक्टुबर तक अवश्य कर देनी चाहिए क्योंकि इसके पश्चात् बोई गई सरसों वर्गीय फसलों पर रोगों का अधिक आक्रमण होता है।
5. भूमि उपचार एवं रोगो से बचाव के लिए फसल की बुवाई से पहले जैव फफूंदीनाशी ट्राइकोडर्मा विरिडी (5 कि.ग्रा. प्रति हैक्टर) को 100 किलोग्राम गोबर की खाद में मिलाकर बुवाई से पूर्व जुताई के समय खेत में डालें।